Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities
(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 3, Issue 1, March 2025; Pages 08 – 11
DOI: 10.5281/zenodo.14899654

Original Research Article

किन्नर संघर्ष की अभिव्यक्ति - 'मेरे होने में क्या बुराई है'

डॉ. पिंकी पारीक,[१] अनिता कुमारी[२*]

[१]सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ निवाई जयपुर, ३०४०२२ राजस्थान, भारत

[२]शोधार्थी, हिंदी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ निवाई जयपुर, ३०४०२२ राजस्थान, भारत

Corresponding author E-mail: devanita13285@gmail.com

Received: 15 February, 2025 | Accepted: 19 February, 2025 | Published: 20 February, 2025

शोध सारांश

भारतीय समाज प्राचीन काल से ही रूढ़ि परंपराओं पर आधारित रहा है। यहां छुआछूत की समस्या सदैव बनी रही है। हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग भी रहते हैं,जो समाज का हिस्सा होते हुए भी अकेले हैं। आमतौर पर हम इन्हें रेलवे स्टैंड, बस स्टैंड, ट्रैफिक सिग्नल या फिर किसी के घर शुभ कार्य होने पर बधाइयां लेते- देखते हैं। समाज इन्हें अलग-अलग नामो से पुकारता है जैसे हिजड़ा, किन्नर, मौसी, उभयलिंगी, पवैया, यूनक, खोजा, जानखा, ख्वाज सरा, अरावानी, खुसरा, मंगलमूखी, थर्डजेंडर, ट्रांसजेंडर इत्यादि।

किन्नर वर्ग एक ऐसा वर्ग है जिसका जन्म तो पुरुष जननांग के साथ हुआ है किंतु उनकी भावनाएं एक स्त्री की होती है। अर्थात जो न तो स्त्री वर्ग में आता है, और मैं ही पुरुष वर्ग में उन्हें किन्नर माना गया है। प्राचीन भाषाविद पाणिनिकृत अष्टाध्याय में इस भेद को स्पष्ट करते हुए लिखा है -"स्तनकेशवटी स्त्री स्याल्लोमरा : पुरुष :सवत उभयोरन्तर भाज्य तदभावे नंपुसकम ॥"[१]

'मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास रेनू बहल का किन्नर जीवन पर आधारित किन्नर जीवन में सकारात्मक बदलाव की पैरवी करता है। यह उपन्यास दर्शाता है कि हमारा समाज उसी को महत्व देता है जो उत्पादन के योग्य है।

चूंकि किन्नर समाज के इस सिद्धांत पर खरा नहीं उतरता, तो उसे उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। लेखिका ने इस उपन्यास में 'शेखर' नामक एक किन्नर के आंतरिक दर्द को व्यक्त किया है।

बीज शब्द: छुआछूत, हिजड़ा, किन्नर, अरावनी, खूसरा, थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर, आंतरिक दर्द

शोध विषय का विश्लेषण

'मेरे होने में क्या बुराई है' शेखर से शिखा बनने की कहानी किन्नेरों के असहनीय दर्द को समेटे हैं। एक पुरुष शरीर में स्त्री की बेचैन आत्मा के दर्द को एक किन्नर से बेहतर कोई नहीं जानता। शेखर को ईश्वर ने शरीर मर्द का दिया परंतु अंदर से वह एक औरत है, इसलिए उसे अपनी माँ की भांति कपड़े पहनना, सजना -सँवरिया अच्छा लगता है। भले ही उसकी शारीरिक बनावट एक पुरुष की है लेकिन आत्मा एक स्त्री की है। जैसे-जैसे शहर बड़ा होता है उसमें स्त्री इच्छा बलवती होती जाती है। उपन्यास में शेखर ने अपनी स्त्री भावना को व्यक्त किया है।

"जब कभी मैं घर में अकेला होता तो कमरा बंद करके मैं अपने दिल में छिपी इच्छाओं को चोरी छिपे पूरी जरूर करता। अम्मा की अलमारी से कपड़े निकलता। चोली पहन कर खुद को आईने में देखाता और ख्वाहिश होती कि किसी तरह छातियों में उभार आ जाए। फिर ब्लाउज, साड़ी, ऊंची एड़ी वाली सैंडल पहनकर लचक लचक कर चलता। अम्मा की बिंदिया, नेल पॉलिश, लिपिस्टिक लगाता, खुद को आईने में निहारता और अपनी ही छवि पर मुग्ध हो जाता।"[२]

रुड़ियों और परंपराओं से जकड़ा समाज किन्नर को हीन भावना से देखाता है। किन्नर के प्रति जो उपेक्षा और घृणा का भाव लोगों के मन में होता है उसे किन्नर स्वयं के मनुष्य होने के लिए कोसता है। जननांग दोषी बच्चों के प्रति समाज का नजरिया परिहास का होता है। समाज को जब उसके लक्षण सामान्य न लगे तो वह फबतियाँ कसने लगता है। उपन्यास में शेखर ने बताया कि "आठवीं कक्षा तक आते-आते मेरी चाल - ढाल बात करने का अंदाज, राहो - रस्म की पाबंदी, तोर - तरीके में बदलाव आ चुका था। दूसरे लड़कों की तरह मेरे शारीरिक अंग पूरी तरह उभरे नहीं थे। ऐसा महसूस होता था, जैसे मर्द के जिस्म में औरत की रुह कैद हो। मोहल्ले के, स्कूल के बच्चे मुझे छक्का कहकर छेड़ने लगे। मेरा मजाक उड़ाते, मगर मुझे किसी का इस तरह तंग करना कभी ने गुजरता,परंतु अम्मा, बाबा परेशान रहने लगे थे। मुझे नहीं मालूम, उन्हें लोगों की क्या बातें सुननीपड़ी, मगर इतना जरूर था कि बाबा और मेरे बीच दूरियां बढ़ती जा रही थी। "[३]

उपन्यास का नायक शेखर दोहरी जिंदगी जीता है। वह घर में पुरुष और बाहर स्त्री का किरदार निभा रहा था। शेखर की मुलाकात सितारा से होती है, जो उसके साथ डांस बार में काम करती है। सितारा के माध्यम से शेखर एक दिन किन्नर बस्ती तक पहुंच जाता है। जहां उसे बहुत सुकून महसूस होता है। पहली बार एहसास हुआ कि यह दुनिया मेरी दुनिया है। अब तक में क्यों इस माहौल, इस दुनिया से दूर था। यहां मर्द के जिस्म में औरत रहती है, जिसे हिंजड़ा नाम दे दिया जाता है। मैं भी शारीरिक और रूहानी सतह पर ऐसी ही एक आधी- अधूरी प्रजाति हूं, जिसे पूर्ण होना आवश्यक है। ये मर्द औरत का ढोंग करते-करते में तंग आ चुका था। मेरे अंदर की औरत चिख -चिख कर आजाद होना चाहती थी। मेरी

बेकरार रूह को सुकून की तलाश थी। में भटकते -भटकते थक गया था। उन सब से मिलकर एहसास हुआ कि वे सब मेरे अपने हैं। मैं उनमें से एक हूं।"[४]

किसी भी घर में किन्नर जन्म को अपने पिछले कर्मों का हिसाब समझने लगते हैं। ईश्वर की कृति को भी अपने भाग्य पर तरस आने लगता है। वह सदैव अपनी अपूर्णता पर सवाल उठता है। किन्नर को अपने परिवार से तिरस्कार एवं अन्याय सहन करना पड़ता है। शेखर के पिता का वक्तव्य देखिए "जिधर तुम्हारे सिंग समा जाएँ उधर जाओ। दुनिया बहुत बड़ी है,कहीं भी चले जाओ। बस दोबारा इधर का रुख मत करना"[५]

एक किन्नर के प्रति समाज अत्यंत क्रूर रूप धारण कर लेता है। उसे किन्नर की भावनाओं की कोई कदर नहीं होती। देह के नरभक्षी भेड़िए इन्हें अपना शिकार बनाते हैं। किन्नर होने के कारण शेखर को बलात्कार का शिकार होना पड़ा। कम उम्र में उसका बलात्कार होने से उसका दुष्प्रभाव उसके बालपन पर पड़ता है। शेखर ने बताया कि "मैं दर्द से कराहता रहा। मेरी आंखें तरसती रही। मैं उनकी लाल आंखें देखकर सहम गया"[६]

समाज किन्नर को मानव नहीं मानता, उसकी पीड़ा को समझने को तैयार नहीं है। किन्नरों कोशापित जीवन जीना पड़ता है। किन्नेरों के प्रति समाज का जो दृष्टिकोण है वह पशु से भी बदतर है। वह घर परिवार और समाज से बहिष्कृत है। सितारा किन्नेरों के जीवन से परिचित कराते हुए कहती है कि "हमारी दुनिया तुम्हारी दुनिया से अलग है। इस दुनिया के अलग उसूल हैं। बाहर वाले बड़ी घृणा से हमें देखते हैं। किसी को हमसे हमदर्दी नहीं। तुम इज्जत की जिंदगी जी रहे हो, क्यों इस नर्क में आना चाहते हो।"[७]

इसी प्रकार अमेरिकी कवि शरेन रफेले की कविता का अनुवाद करते हुए 'शरद सिंह' लिखते हैं -"जब मुझे लगातार याद दिलाया जाता है तो मेरी दुनिया अलग हो जाती है मुझे दो की दुनिया में रहने के लिए नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि मैं तीसरा हूं"।[८]

शेखर से शिखा बनने के बीच कई समस्याएं आई। शिखा किन्नेरों के परंपरागत बधाई को ने अपना कर डांस क्लास चालू किया। पढ़े लिखे होने के कारण शिखा डांस एकेडमी से अच्छी खासी कमाई करता है। परंतु प्रत्येक किन्नर की किस्मत में शिक्षा पाना नहीं है। कुछ को तो बैंड बाजा में कमर तोड डांस करने के बाद भी, उन्हें उनकी मेहनत का पूरा पैसा देने यह समाज तैयार नहीं है। इतनी मेहनत करने के बावजूद किन्नेरों को सम्मान पूर्वक जीवन जीने का हक यह समाज नहीं दे पाया है। ये अपना परिवार,गांव, शहर छोड़कर कहीं गुमनामी का जीवन जीने के लिए विवश है। ये समाज की नफरत और अकेलेपन का दंश झेलते -झेलते असामयिक मृत्यु के हवाले हो जाते हैं। सितारा की असामयिक पर शेखर ने कहा कि "आत्महत्या इस कबीले के लिए कभी कोई खास खबर नहीं बनी, अक्सर डिप्रेशन के शिकार हिजड़े पहले नशा, फिर आत्महत्या करके इस आदि -अधूरी जिंदगी से छुटकारा पा लेते हैं।"[९]

हालाँकी १५ अप्रैल २०१४ को माननीय उच्चतम न्यायालय ने किन्नेरों को 'तीसरे लिंग' के रूप में मान्यता देकर न केवल किन्नर अपितु समस्त मानव जाति के लिए प्रसंसनीय निर्णय लिया है। किन्नेरों को पिछड़े वर्ग में शामिल करने से इन्हें आरक्षण का लाभ प्राप्त होगा। किन्नेरों को "थर्डजेंडर" के रूप में मिली पहचान को 'अस्तित्व' और पहचान में डॉक्टर

विजेंद्र प्रताप सिंह ने इस प्रकार रेखांकित किया है -'थर्डजेंडर' यही होगा अब हमारा वोटरकार्ड, राशनकार्ड, और नेमप्लेट पर स्थाई अस्तित्व और नाम, अब तृतीय लिंगी है हमारी पहचान, अब मिली है हमको भी पहचान "।[१०]

निष्कर्ष

रेनू बहल ने शेखर और सितारा के माध्यम से किन्नेरों के संघषमयी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। आज हमारे समाज में शेखर और सितारा जैसे ने जाने कितने किन्नर हैं जो नारकीय जीवन जीने को विवश है। आज बहुत से किन्नर पढ़े लिखे हैं किंतु लैंगिक विकलांगता के कारण उन्हें रोजगार नहीं मिलता विडंबना यही है कि बिन योन स्थिति के कारण किन्नेरों के पुनर्वास, उनके जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक स्तर एवं सरकारी स्तर पर कोई प्रयास नहीं किया गया।

संदर्भ ग्रंथ

१. लिंगानुशासन शब्दों के(लिंग ज्ञान करने का शास्त्र) संस्कृत भाषा -htm

२. 'मेरे होने में क्या बुराई है' :- रेनू बहल सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली २०२० पृष्ठ संख्या २०-२१

३. वही पृ -२०

४. वही पृ -२३

५. वही पृ -२६

६. वही पृ -१९

७. वही पृ -३२

८. थर्ड जेंडर विमर्श -शरद सिंह सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ.-११४

९. मेरे होने में क्या बुराई है -रेनू बहल पृ -८४

१०. अस्तित्व और पहचान -डॉक्टर विजेंद्र प्रताप सिंह पृ.- १५६